सीमित प्रसार के लिये

कारीगर नज़रिया

● यह कारीगर समाज का ज्ञान आंदोलन है। ●

● कारीगर समाज अपने नज़रिये पर फक्र करें। उसका नज़रिया, उसकी विद्या उसका हुनर पढ़े-लिखे लोगों के मुकाबले कम दर्जे का नहीं है। ●

● कारीगर नज़रिये पर गढ़ी गई दुनिया आज की दुनिया से एक बेहतर, खुशहाल और बराबरी की दुनिया बनेगी। ●

अंक 3 | सितम्बर 2013 | सहयोग राशि : 2 रुपये

lEikndh;

vkvk] Kku ipk;r dj

Kku&ipk;r एक ऐसी पंचायत है जहाँ उन लोगों के ज्ञान की शक्ति को संजोने और उजागर करने का काम होता है, जो कभी स्कूल या कालेज नहीं गये। ज्ञान पंचायत वह जगह है जहां से यह दावा किया जाता है कि ज्ञान केवल पढ़े–लिखों के पास नही होता है बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों के पास भी होता है और उनका ज्ञान पढ़े–लिखों से कम दर्जे का नहीं है।

Kku ipk;r लोकविद्याधर समाज की एकता का स्थान है। लोकविद्याधर यानि वे लोग जो लोकविद्या के बल पर अपनी जीविका चलाते हैं, जैसे किसान, तमाम तरह के कारीगर, छोटे–छोटे दुकानदार, आदिवासी और हर घर की स्त्रियाँ। आज सरकारों की नीतियाँ लोकविद्याधर समाज के ज्ञान को कुचलने और उनकी जीविका को उजाड़ने की नीतियाँ हैं।

Kku ipk;r में लोकविद्याधर मिलकर अपने–अपने ज्ञान की शक्ति को संजोते हैं, इन ज्ञान की धाराओं में भाईचारा बनाते हैं और समाज के सामने अपने ज्ञान (लोकविद्या) का दावा प्रस्तुत करते हैं।

nkok D;k g\ दावा यह है कि लोकविद्या के बल पर जीने वालों को उतना ही आर्थिक मूल्य और सामाजिक प्रतिष्ठा मिलनी चाहिये जितनी सरकारें अपने पढ़े–लिखे कर्मचारियों को देती हैं। ज्ञान पंचायत यह दावा करती है कि पढ़े–लिखों की विद्या के बल पर जो दुनिया आज बनाई गई है उसमें प्रदूषण, पर्यावरणीय संकट, जल की कमी, युद्धों की भरमार, सत्ताओं की निरंकुशता और समाज में हर तरह की गैर–बराबरी अपने चरम पर पहुंची है। ये परिणाम खुद ही साबित करते हैं कि इस विद्या में बुनियादी ख़ामी है। इससे उबरने का रास्ता लोकविद्या में है। ज्ञान–पंचायतें इस आवाज को बुलंद करती हैं कि

?kkV&?kkV g fofo/k Kku/kj
mud Ckhp vy[k txkuk g]
dku g Kkuh] Kku dgk g]
Qlyk ;g djokuk gA

ज्ञान पंचायत का प्रतीक एक पाँच खंम्भों की मड़ई है। ये पाँच खम्भें समाज के प्रमुख पाँच ज्ञानी समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं– किसान, कारीगर, महिलायें, आदिवासी और छोटे–छोटे दुकानदार।

vkvk] ge gj xko] dLc] cLrh] ckt kj] egYy vkj txy e Kku&ipk;r cuk; vkj ykdfo|k/kj lekt d Kkuh gku dk nkok cyn djA

ykdfo|k/kj lekt dk ;g vkokgu xhr xk;A

लोकविद्या के स्वामी बोल
ज्ञान के अपने दावा खोल ।।

तेरा ज्ञान है अनमोल
मूर्ख, गंवार न ख़ुद को तोल ।।

तेरी विद्या है बेजोड़
लोकविद्या है अनमोल
लोकविद्या का दावा ठेक।।

fdlku dkjhxj ,drk cyn djk!

- gj dkjhxj ifjokj vkj gj fdlku ifjokj viu Kku vkj dke d cy ij ml vkenuh dk gdnkj g tk ljdkj viu depkjh dk nrh gA tc rd bruh vkenuh iDdh ugh gkrh rc rd [k'kgkyh lHko ugh gA
- ukdjh d ekQr lfuf'pr vk; d fy; vk/kfud f'k{kk dh dlkVh >Bh vkj i{kikri.k gA D;k dkjhxj ;k fdlku dk Kku fdlh ,e-,-&ch-,- l de gkrk g\ rk ;g xj&cjkcjh D;\

अगर कोई भी सियासी पार्टी यह सवाल उठाने के लिये तैयार नही है, तो हमें उनसे क्या लेना–देना? viu Kku d fy; okftc nke ekxuk Kku dh jktuhfr gA यह उन संगठनों की राजनीति है जो तथाकथित 'विकास' के झूठ और पाखण्ड को अच्छी तरह समझते हैं और राजनीतिक दलों के दल–दल में नही फंसते। किसान और कारीगर मिलकर ज्ञान की लूट की इस व्यवस्था को चुनौती दे सकते हैं और एक ऐसी राजनीति बना सकते हैं जो उन्हें उनके ज्ञान का पूरा मूल्य दे और समाज में बाकी सबके साथ बराबरी का स्थान दे।

उत्तर प्रदेश किसानों और कारीगरों का प्रदेश है। जिस तरह यहां के एक लाख गांवों में अपनी छोटी–छोटी जोतों में किसान अनाज पैदा करता है उसी तरह यहां के सभी गांवों, कस्बों और शहरों में बहुमत आबादी कारीगरों की है जो हर छोटे–बड़े निर्माण और सेवा का काम करते हैं। यह समाज इन्हीं किसानों और कारीगरों के ज्ञान के बल पर चलता है। किसान कारीगर एकता में एक नये युग का संदेश है।

ykdfo|k tu vkUnkyu] प्रेमलता सिंह 9369124998
Hkk- fdlku ;fu;u] दिलीप कुमार 'दिली' 9452824380
dkjhxj utfj;k] एहसान अली 8303244310

e|t¶Qjuxj dk nxk

मुज़फ्फरनगर का यह दंगा और उसमें मारे जाने वाले लोगों की तादाद किसी भी सभ्य समाज के माथे पर एक बहुत बड़ा कलंक है। समाज का काम करने वाला हर इंसान जानता है कि हिन्दू और मुसलमान आपस में शांति और सद्भाव से रहते हैं और ऐसे ही रहना चाहते हैं। फिर क्या बात है कि बार–बार फसाद होता रहता है और कभी–कभी ऐसे दंगे कि इंसानियत ही कटघरे में खड़ी हो जाये। चारों तरफ यही कहा जा रहा है और यही राय जाहिर की जा रही है कि यह सब सियासी चालों और षड़यंत्रों का नतीजा है। तो हल क्या है? क्या यही सियासत चलती रहेगी, दंगे होते रहेंगे, लोग मरते रहेंगे, घर उजड़ते रहेंगे?

अब इतने सालों के अनुभव के बाद हम जानते हैं कि शांति और सद्भाव मिशन और समितियों में इसका हल नहीं है। कोई तुरत का या चंद दिनों में हासिल होने वाला हल नही है। जितनी गंभीर समस्या है उतने ही गंभीर हल की मांग करती है। समस्या गंभीर तो है ही लेकिन गहरी नही है। गंगा जमुनी तहज़ीब बेहद लोकप्रिय है, जनता द्वारा ही बड़े लम्बे दौर में तैयार की गई है। इस तहज़ीब का आधार ज्ञान में है जो आम लोगों के पास होता है, किसानों और कारीगरों के पास होता है। पूंजी चंद लोगों के पास होती है और दलगत राजनीति के मार्फत समाज में विभाजन और तोड़फोड़ का काम करती है। इसलिये हल के लिये हमें आज के समाज में ताकत रखने वालों की ओर नहीं देखना चाहिये बल्कि किसानों और कारीगरों की ओर देखना चाहिये। उनके ज्ञान और संगठन की ओर देखना चाहिये। आम आदमी का दर्द आम आदमी ही समझता है। उसे ही आगे आना होगा और पूंजी, लाभ और रसूख़ की सियासत से मुकाबला करने के लिये अपने ज्ञान और नैतिकता के आधार पर एक नई सियासत खड़ी करनी होगी। किसान–कारीगर एकता का काम एक ऐसी ही सियासत की ओर बढ़ने का काम है।

dkjhxj utfj;k dh igy

,gklu vyh
संयोजक, कारीगर नज़रिया

इस वर्ष मई के महीनें में *dkjhxj utfj;k* के संयोजक एहसान अली व भारतीय किसान यूनियन के वाराणसी मण्डल के महासचिव दिलीप कुमार 'दिली' के संयुक्त नेतृत्व में उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के कुछ जिलों में fdlku&dkjhxj ,drk dk lns'k लेकर एक यात्रा की गई। वाराणसी से शुरू हुई यह यात्रा गाजीपुर, मऊ, मुबारकपूर, गोरखपुर, मगहर, बस्ती, अकबरपुर, आजमगढ़ जिलों में किसानों और कारीगरों के बीच वार्ता और बैठकें करते हुये व कारीगर नज़रिया के अंकों को वितरित करते हुए वापस वाराणसी पहुंची।

इन सभी जगहों पर हुई वार्ताओं का मुद्दा यह था कि किसान और कारीगर इस देश के बड़े ज्ञानी समाज हैं और सरकार की नीतियाँ दोनों के ज्ञान (लोकविद्या) को समान रूप से कुचल रही हैं, जिसके चलते दोनों समाजों में विस्थापन, भुखमरी, और आत्महत्याओं का दौर चला है। ये नीतियां लोकविद्याधर परिवारों को मज़दूर बनाने का षड़यंत्र हैं। fdlku vkj dkjhxj lekt ,dtV gkdj viu Kku dh ifr"Bk vkj mld vkfFkd eY; dk iklr dju d fy; ,d lkFk vkokt cyn djA

इस यात्रा में बुनकर समाज के पड़ाव के इदरीस भाई, सरैया के गुलज़ार जी, कटेसर के मुइनुद्दीन जी लोहता के रेयाजुद्दीन व बाबुद्दीन हफीज, दुलहीपुर के छोटक भाई, बैतुल भाई, महतो साहब, मऊ के अबुबकर जी, मुबारकपुर के खैरूलबशर जी से लम्बी वार्तायें हुई। 3–4 स्थानों पर बैठकें हुई जिनमें कई कारीगर एक साथ मौजूद थे। बात यह हुई की सरकारें ज्ञान–ज्ञान में फर्क करती हैं जो गलत है। कारीगर का या किसान का ज्ञान पढ़े–लिखों से किसी अर्थ में कम नही है तो उन्हें भी क्यों न पक्की नौकरी और निश्चित वेतन की व्यवस्था हो ? क्यों न उन्हें सरकारी कर्मचारी के बराबर आय हो ?

बुनकर समाज के अलावा इस मुद्दे पर मल्लाह, रजक, कुम्हार व नाई समाजों से, ठेले–पटरी–गुमटी के दुकानदारों के संगठनों से, दर्जियों से, मोटर साइकिल–मोबाइल के मरम्मत करने वालों से और तमाम तरह के मिस्त्रियों से वार्तायें जारी हैं।

यात्रा में सभी जगह इन विषयों पर गर्माहट भरी वार्तायें हुई। t:jr bl ckr dh g fd fdlku vkj dkjhxjk d lxBu vkj lkekftd ipk;rk e bl enn ij fopkj gk vkj eu cuku dh r;kjh gkA bll igy d jkLr [kyx vkj fdlku&dkjhxj lektk dh [k'kgkyh dk jkLrk cuxkA

Kku dh jktuhfr e/; izns'k esa ubZ igy

Kku dh jktuhfr dk cqfu;knh fopkj ;g gS fd euq"; Kku dk izk.kh gS ;kfu vius Kku ds cy ij thus dk vf/kdkj euq"; dk tUefl) vf/kdkj gSA bruk gh ugha cfYd ;g Hkh fd lHkh rjg ds Kku cjkcj ds lEeku ds gdnkj gSa vkSj blh esa euq"; vkSj euq"; ds chp cjkcjh dk nk'kZfud vk/kkj gSA

ज्ञान की राजनीति की बुनियादी मांग यह बनती है कि सभी किसानों, आदिवासियों, कारीगरों, छोटा–छोटा धंधा करने वालों, महिलाओं, तरह–तरह की सेवा व मरम्मत करने वालों को, यानि उन सबको जो लोकविद्या से काम करते हैं, एक सुनिश्चित पक्की आमदनी होनी चाहिये, जो कम से कम सरकारी कर्मचारी के बराबर हो। इससे देश का सारा श्रम और सारा ज्ञान नियमित काम में लग जायेगा। सामान्य जनता के विकास और देश को आगे बढ़ाने का इससे तेज़ कोई रास्ता नहीं है। नौकरी के मार्फत सुनिश्चित आय के लिये आधुनिक शिक्षा की कसौटी झूठी और पक्षपातपूर्ण है।

ykssdfo|k tu vkUnksyu ने मध्य प्रदेश से यह आवाज़ खड़ा करना शुरू कर दिया है। वहां के नगरों, इन्दौर, खण्डवा, इटारसी, सिंगरौली, भोपाल और ग्वालियर में सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा किसान, कारीगर और आदिवासियों के संगठनों से बातचीत शुरू की जा चुकी है। उत्तर प्रदेश में भी यह शुरूआत की जा रही है।

हर किसान, कारीगर, आदिवासी और छोटे दुकानदार के घर से एक व्यक्ति, स्त्री या पुरुष को ज्ञान की राजनीति का कार्यकर्ता बनना होगा। यह पूरे समाज की बात है और इसके लिये दलगत राजनीति से ऊपर उठना होगा, आन्दोलन करना होगा।

dkjhxj ds Kku dk eqY; nks

ykssdfo|k/kjksa dh jk;

कारीगर नज़रिया ने वाराणसी के लोकविद्याधर समाज के बीच लोकविद्या के लिये पक्की आय की आवश्यकता का सवाल रखा और उनकी राय जानने की कोशिश की। बुनकर, कुम्हार, तरह–तरह के मिस्त्रियों और ठेले–पटरी के दुकानदारों के संगठनों के नेताओं से वार्ता हुई। यह वार्ता आगे भी अनेक समाजों से जारी रखी जायेगी और कारीगर नजरिया में प्रकाशित की जायेगी।

iztkifr dqEHkdkj fgrdkfj.kh lHkk ds vË;{k jktsUnz pØ/kj ने कहा कि जिन्हें हम बनाते हैं उसे तो लोग पूजते हैं लेकिन बनाने वाले की यानि हमारी कदर नहीं करते। हमारा ज्ञान जीवन का ज्ञान है, इसे पढ़े–लिखों की शिक्षा के बराबर माना जाना चाहिये। हमने न्यूटन से भी पहले गति के सिद्धांत को जाना है। हमें हमारी कारीगरी और ज्ञान का पक्का वेतन मिलना चाहिये।

fi'kkp ekspu ds okjk.klh vkVks fjis;fjax] ,lksfl,V ds ';ke lqUnj feL=h] जो बुलेट के विशेषज्ञ हैं, ने कहा कि पक्का वेतन मिले तो अच्छा होगा, लेकिन ऐसा होगा नही। नौकरी के लिये शिक्षा की कसौटी झूठी है। क्या हम आई.टी.आई. या डिप्लोमा या पालिटेक्निक वालों से कम जानते है? बुलेट कम्पनी का इंजीनीयर भी हमारी दुकान पर आता है, कहीं बात फंसती है तो हमी ठीक करते हैं, वह तो थककर लंच करने चल देता है। हमारा ज्ञान इंजीनीयर से कम नही है। पक्की आय का इंतजाम तो होना चाहिये। हमारा संगठन बने तो इस बात को उठाया जा सकता है।

okjk.klh dSaV ds iVjh 0;olk;h laxBu ds lektoknh usrk Qwypan ;kno th ने कहा कि छोटे दुकानदार तो व्यवसायी हैं, इन्हें पक्का वेतन कैसे मिल सकता है? ये 1000–1500 रूपये दिन में कमा लेते हैं। हाँ, लेकिन जिस तरह सरकार इण्डस्ट्रियल इस्टेट बनाती है वैसे ही छोटे दुकानदारों को भी दुकानें बनाकर देनी चाहिये। ऐसा 1958 में वाराणसी में हुआ भी है। हाँ, लेकिन पक्की आय की जो बात है वह हो तो छोटे दुकानदार के लिये अच्छा है, पर होगा कैसे? पुराने ढ़ांचे से बाहर निकलने कि ज़रूरत है। शून्य से फिर शुरू करना होगा, जिसमें सबका हित सधता हो।

vkyeiqjk ds eqUuhnhu valkjh ने कहा कि इस समय बनारस का हथकरघा उद्योग दम तोड़ रहा है। बुनकरों की हिफाजत के लिये बनने वाली केन्द्र सरकार की नीतियां उद्योगपतियों के उद्योगों को लाभ पहुंचाने वाली होती हैं। वह रेशम कहां से खरीद पायेगा? हथकरघा के डिज़ाइन पावरलूम सेक्टर उड़ा ले जाता है। कोई रोक नही है। यदि सरकार की नजर में बुनकरों की कारीगरी और कला की नफ़ासत की कदर है, तो वह हमारे लिये क्या करती है? हमारे इल्म और हुनर की क्या कीमत तय करती है? महज 100 या 150 रुपया, बस्स! हमारी सरकारों को बुनकरों की भुखमरी और लगातार हो रही आत्महत्याओं पर गौर करने की फ़ुरसत ही नही है।

सरकार तय करे कि महीने भर में कितनी साड़ी बनानी है? हम बनायेंगे और उसका हमें कितना पक्का वेतन मिलेगा यह भी तय कर दे। बनारसी साड़ी बनाने वाले हथकरघा उद्योग के कारीगरों की तंगी का दिन तभी कटेगा जब उनको नियमित महीने भर काम और महीने के अन्त में सरकारी कर्मचारी के बराबर नियमित तनख्वाह मिलेगी। साड़ी के लिये कच्चा माल, बिजली और बाजार की व्यवस्था पक्की तौर पर हमारे मशविरे से तय होना चाहिए।

cqudj¨a dk etnqjh c<+kus ds fy;s la?k"kZ

fnyhi dqekj ^fnyh^ भारतीय किसान यूनियन

वाराणसी में बुनकर मजदूर मुत्तेहदा फ्रंट के तहत इस वर्ष के शुरू में लगभग तीन महीने बुनकर की मजदूरी बढ़ाने के लिये आन्दोलन हुए। फ्रंट का कहना है कि सन् 2006 में सरकारी दर पर जो बेसिक मजदूरी तय हुई आज तक वही है, जबकि मंहगाई दोगुने से ऊपर चली गई। कम मजदूरी के चलते हथकरघा उद्योग बन्द होने के कगार पर है और उसके कारीगर पावरलूम पर आ गये। सोलह घंटे काम करने के बाद बुनकर दिन में महज 150 से 200 रुपये कमा पाते हैं। सरकार से हमारी मांग है कि बुनकर की दैनिक मजदूरी 400 रुपये प्रतिदिन किया जाय। अपनी मांग के विचार–मशविरे और समर्थन के लिये बुनकर मजदूर मुत्तेहदा फ्रंट ने शहर के छह प्रमुख बुनकर बस्तियों में पंचायतें कीं। बुनकर बेहद नाराज हैं। उनकी नाराजगी इन पंचायतों में खुलकर सामने आई। पंचायतों में वाराणसी के बुनकरी उद्योग के ढांचे पर ही सवाल उठाये गये।

बुनकरों ने सभी तंजीमों के सरदार लोगों को अपनी इन पंचायतों में बुलाया। जैतपुरा के पीर आला बाबा मैदान की पंचायत में तंजीम चौदहों के सरदार मकबूल हसन साहब आये और मजदूरी बढ़ाने का भरोसा दिये। उनके बयान से अन्य तंजीमों से संवाद का रास्ता भी खुला लेकिन बुनकरों की समस्या का समाधान अभी तक नही हो पाया है।

यह जानना ज़रूरी है कि बुनकर हमारे समाज का आवश्यक हिस्सा हैं और किसान समाज के बाद बुनकर समाज ही सबसे बड़ा समाज है। वह मज़दूर नही कारीगर का रुतबा रखता है। मज़दूर तो वह होता है जिसके पास श्रम के अलावा कुछ भी न हो। बुनकर तो दिमाग का काम करता है। जिस तरह समाज में अध्यापक, इंजीनियर, वकील, क्लर्क जैसे पढ़े–लिखे लोग हैं ठीक उसी तरह बुनकर भी ज्ञानी हैं। बुनकर ही क्यों पूरा कारीगर समाज अपने ज्ञान के बल पर श्रम के साथ काम करता है। तब फिर बुनकर की आमदनी और अध्यापक, इंजीनियर, वकील या क्लर्क की आमदनी में फर्क क्यों? बुनकर भी उसकी कारीगरी के काम के लिये निश्चित और नियमित पगार का हकदार है।

Cqudj lekt ds fgr esa dke djus okys 0;fDr;ksa vkSj laxBuksa dks bl lkp dks c<+kok nsuk gksxk fd cqudj vkSj cqudjh ds bl m|ksx dh cqgrjh rHkh gksxh tc cqudj dks etnwj ugha cfYd Kkuh dkjhxj ekuk tk; vkSj mlds fy;s ljdkjh deZpkjh ds cjkcj iDds vkSj fu;fer osru dh 0;oLFkk gksA

Òs nÒko ugÈ pY¨xk

izseyrk flag] लोकविद्या जन आन्दोलन

कारीगर समाज में बुनकर, लकड़ी–पत्थर–मिट्टी, चमड़े, लोहे के काम करने वाले, राजगीर, धोबी, दर्जी, नाई, मल्लाह, रंगरेज, हलवाई, पटरी–ठेले पर तरह–तरह के खाद्य पदार्थ बनाने वाले, साईकिल–मोटर साईकिल, कार व अन्य बड़ी गाड़ियों, टेलीविजन, मोबाईल, कम्प्यूटर एवं दूसरे प्रकार की अन्य छोटी–बड़ी मशीनरी के मरम्मतकर्ता इत्यादि अनगिनत किस्म की कारीगरी करने वाले लोगों की बड़ी जमात है। ये ज्ञानी लोग हैं और 10–12 घण्टे हर रोज काम करके अपना और समाज का पोषण करते हैं।

लोकविद्याधर लोगों की प्रयोगशालायें और विश्वविद्यालय तो समाज का खुला फलक होता है। अपने प्रशिक्षण के समय से ही ये समाज की आर्थिक व्यवस्था में योगदान कर उसे मजबूत करते जाते हैं। दूसरी ओर विश्वविद्यालय के विद्वान तैयार करने में समाज की भारी धनराशि खर्च होती है। तैयार होने के बाद औसतन 4–6 घण्टे कार्य करने के एवज में उन्हें मोटा वेतन, और उत्तम व्यवस्थायें मिलती हैं। यानि भेदभावपूर्ण नीतियों के तहत विश्वविद्यालय की विद्याओं को प्रतिष्ठा मिली हुई है और उनको अधिक मूल्य दिया जा रहा है। इसी के चलते लोकविद्याधर समाज के सामने लोकविद्या की प्रतिष्ठा और सम्मानजनक आजीविका का सवाल खड़ा हो गया है।

अब समय आ गया है लोकविद्याधर समाज एकजुट होकर अपनी आवाज बुलंद करें, इस भेदभावपूर्ण नीति का विरोध करें और अपने ज्ञान, लोकविद्या का दावा प्रस्तुत करें।

●

अपील व सम्पर्क

'कारीगर नजरिया' कारीगर समाज का अखबार है। इसमें कारीगर अपनी समस्याओं, माँगों, क्षमताओं और समाज के बारे में अपने नजरिये को सामने लायें।

सम्पर्क पता :
सी. 27/249-10, विवेकानंद नगर कालोनी, जगतगंज, वाराणसी-221002
सम्पर्क फोन :
दिलीप कुमार 'दिली', मो. 9452824380
एहसान अली, मो. 9336016119
प्रेमलता सिंह, मो. 9369124998

लोकविद्या जन आन्दोलन की ओर से प्रेमलता सिंह व एहसान अली द्वारा प्रकाशित तथा सत्तनाम प्रेस, पाण्डेयपुर में मुद्रित।